कमलापति की कमला को बचाओ कलंक से....

बाबुल के आंगन में हंसती खिलखिलाती, सबको अपनी ओर बरबस खींचती, वे नन्हे पावों से अनाज के मोती रूपी दानों को बिखेरती, एक ऐसी आहट, जिसका स्पर्श भी स्वर्गिक सुख देता है, आज वह करुण क्रन्दन करते पावों को कोई भी दीदार को राज़ी नहीं। कहां गई वो अस्मिता, खो गई वह पहचान, कोई भी उस अन्तरतम आवाज़ को पहचाने भी तो कैसे, क्योंकि सभी रमे पड़े हैं, उस देह की रक्षा में। उसे बचाने के लिए न जाने कितने उपाय करते, फिर भी उस अस्मिता, उस गरिमा की रक्षा नहीं हो पा रही है।

आप कभी कल्पना करके देखें, कोई ऐसी स्थिति बने, आप बहुत अच्छी खुशहाल ज़िन्दगी को जी रहे हैं तभी अचानक आप उन परिस्थितियों से घिर जाते हैं, जिसमें रक्षा तथा सुरक्षा, समाज तथा सामाजिक बन्धनों का डर, आपकी अपनी गरिमा जब संकट के घेरे में हो! आप उसे सबसे कहते फिरेंगे क्या? आप हो हल्ला मचायेंगे कि आइए देखिए ये क्या हो गया! नहीं,

- ब्र. कु. गंगाधर

आप उसे पर्दा करेंगे कि किसी को रत्ती भर आहट ना हो, आखिर यह हमारी इज़्ज़त है, आबरु है। इसे हमें बचाना है। वही है सबसे बड़ा आधार हमें समाज में ऊँचा सिर उठा कर जीने का। तो यह बात तो स्वयं सिद्ध हो रही है कि नारी की अस्मिता हमारे लिए क्या मायने रखती है।

जीवन के सफ़र की शुरुआत नारी से शुरु होती है और नारी पर अन्त। हर कोई व्यक्ति, व्यक्तिगत रूप से, विशेषत: यह महसूस कभी ना कभी तो करता ही है, उसे यहाँ लाने से लेकर, उसकी जीवन संगिनी बन, साथ निभाने तक, और जब हाथ-पाँव काम ना करें, अन्तिम पड़ाव तक उसकी परछाई, उसका साया हमें कितना सुख देता रहा है! देता है। वह अन्त तक सहन करती, समाती व आपके ऊपर की आँच को अपने ऊपर लेने को आतुर रहती है। जब कोई भी आत्मा नारी बनती है, तो शुरु से ही उसके अन्दर ये गुण जन्मजात आ जाते, कि हमें जीवन में नारीत्व को धारण करना है। ऐसा ही आप भी सोचते होंगे। लेकिन सच्चाई उसके विपरीत है, अनुवांशिक रूप से कोई भी अपने बारे में ऐसा नहीं सोच सकता!

लेकिन हमारे खुद के विचार उस पर प्रभाव ज़रूर डालते हैं कि इसे बचाना है, इस डर को मन पूरी तरह स्वीकार करता जाता। फिर एक भयावह रूप लेकर एक कथानक (रचना के आदि से अन्त का सामूहिक रूप) बन जाता है। फिर इन्हीं बातों को कथाकारों को कथा प्रसंग तथा कथांश में एक दृश्य अभिनित करने का जन्म-जात अधिकार मिल जाता है। नारी ऐसी ही थी, इसे ऐसे ही रखना है। आप ज़रा गौर कीजिए, जिन्हें हम कमलापति की कमला कहते, जो हमेशा कमलासन धारण कर कमलिनी पर विराजित होती है। आज हम उसे कमाई, कमानी, कमअवत तथा एक करनी की भांति देखते हैं। नारी उस करतार की करामात है, जिससे इस सृष्टि को रचा गया। अगर वह एक करवट ले तो वह करामात कर सकती है। वह उस करुणानिधान के करीब रहने वाली कर्णेन्द्रिय व जो ज्ञान रूपी कर्णफूल धारण कर, निरन्तर कर्तव्य की ओर अग्रसर है। नदी की कल-कल के कलरव (मधुर-ध्वनि) की भांति है व नारी जो कलत्र वन कलगी (तोपी) जैसी रक्षात्मक है, अगर वो हट गयी ना तो कलई खुलते देर नहीं लगेगी।

हमें एक साथ एक ऐसा संकल्प लेना होगा, उस कर को, उस कलई को जिसने आजन्म हमारे आंसू पोंछे, हमें कर्मठ बनाया, कुछ ऐसा करो, जो कल्प में करामात के रूप में जाना जाए, कि रक्षा व अस्मिता के लिए, उसे कलंक रूपी कालिमा ना लगने दें।

दृष्टि अर्थात सृष्टि

यह तुम पर निर्भर है। तुम खड़े हो सकते हो गुलाब की झाड़ी के पास और कांटे गिन सकते हो-कांटे वहां हैं। और अगर तुम कांटों में बहुत उलझ जाओ, हाथ-पैर लहूलुहान हो जाएं, तो तुम फूल को देख ही न पाओगे। फूल सिर्फ एक रंगीन धब्बा मालूम पड़ेगा। शायद उस गुलाबी फूल में भी तुम्हें रक्त का ही दर्शन हो। क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भर गए होंगे, और तुम्हारे मन में एक नाराज़गी होगी कि इतने कांटे बनाने की ज़रूरत क्या थी! और जब इतने कांटे हैं तो तुम कैसे भरोसा करो कि फूल होगा।

फिर दूसरा कोई व्यक्ति है जो फूल को देखता है, फूल को छूता है; नासापुटों को भरता है फूल की गंध से। और फूल में अदृश्य के उसे दर्शन होते हैं, झलक मिलती उसकी, जिसको पकड़ पाना मुश्किल है। एक अनूठा सौंदर्य फूल में उतरा है! ऐसे व्यक्ति को यह भरोसा करना मुश्किल होगा कि ऐसी गुलाब की झाड़ी में जहां इतने अनूठे फूल लगते, कांटे हो कैसे सकते हैं! और अगर कांटे होंगे, और अगर कांटे हैं, तो वह सोचेगा कि ज़रूर इस फूल के हित में होंगे। कांटों से भी उसकी दुश्मनी चली जाती है जो फूल को देखने लगता है, जो कांटों को देखने लगता है, फूल से भी उसकी दोस्ती हट जाती है। देखने पर बहुत कुछ निर्भर है। सब कुछ निर्भर है। दृष्टि अर्थात सृष्टि।

विघ्नों को देख घबरायें नहीं विघ्नों पर विजयी बनें

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

कोई मेरे से पूछते हैं आपकी मेमोरी ऐसे कैसे बनी? तो मैं कहती हूँ इस मेमोरी में और कोई बात है ही नहीं। 'मैं', 'बाबा' और 'ड्रामा' इसके सिवाय और कोई बात बुद्धि में है ही नहीं। मेमोरी माना मैं मरी (पुरानी पराई बातों से)।

एक है सच्ची दिल से सेवा करना, मेरे बाबा का यज्ञ है, यज्ञ की सेवा का कितना भाग्य है, इस संकल्प के साथ खुशी से सेवा करते हैं। पहले नम्बर में आने वाला दाना जो पुरुषार्थ करेगा सच्ची दिल से करेगा। दूसरी है - मान शान से सेवा करना, अगर मान नहीं मिलता है तो सेवा में रूचि नहीं होती है। तीसरी है - टाइम पास करने के लिए, निमित्त मात्र करता है, अन्दर दिल से नहीं करता है। सच्ची दिल से साहब राज़ी हो तो बहुत खुशी होती है, माला में आयेंगे। कोई मित्र-सम्बन्धी, पुराने सम्बन्धी या यहाँ भी कोई ब्राह्मणों में भी किसी से थोड़ा लगाव हुआ, थोड़ी अटैचमेन्ट हुई, थोड़ा नाम-रूप में फंसा, अलबेला वा सुस्त है, थोड़ी ईर्ष्या भी है, ऐसे कोई गलती हुई तो सारी की कमाई चट होने से वो 108 की माला तो क्या 16 हज़ार में भी नहीं आयेगा, एलाऊ नहीं होगा क्योंकि पहले दाना वाला कभी नीचे ऊपर नहीं करेगा, इसलिए संगमयुग का समय ऐसा है जो अपने समय की, संकल्प की वैल्यू देखो। इसमें अलबेलाई, आलस्य नहीं चाहिए।

जब ज्ञान की वैल्यू है तभी महसूस होगा यह ज्ञान खज़ाना है। ज्ञान खज़ाने से शक्ति मिलती है। मुरली की गहराई में जाने से उसकी वैल्यू का पता चलता है। बाबा की मुरली में एक याद की बात होगी तो और कुछ नहीं कहेगा, सब कुछ छोड़, सब कुछ भूल एक बाप को याद करो। याद में कोई बात याद न आवे। चेक करना है, चेंज होना है। भले कैसे भी विघ्न आयें लेकिन उन विघ्नों को देख घबराना नहीं है। ऐसी स्थिति हो, विघ्न चला जावे तो यह अन्दर से तैयारी करते हैं। जब से मैं बाबा के पास आई तो बाबा ने मेरे में उम्मीदें रखी कि बच्ची ज्ञान में ध्यान देगी। शुरु से ही मुरली पर मेरा बहुत ध्यान रहता है, मुरली बहुत प्यारी लगती है। कभी भी भूल से मुरली में मुझे कोई डाउट नहीं उठा है। कईयों को थोड़ा होता है, तो कहते हैं बाबा की यह बात मुझे समझ में नहीं आई। समझ में नहीं आई माना बेसमझ हैं। और बातें समझने के लिए टाइम देते हैं, बाबा की मुरली में इतना टाइम नहीं देंगे, विचार नहीं करेंगे, दोबारा उसे रिवाइज़ नहीं करेंगे, तो वो बात कैसे समझ में आयेगी? वो फिर याद कैसे रहेगी?

संसार में मरना और जीना, यह तो देख रहे हैं होता ही है, अभी जी रहे हैं परन्तु उसमें कर्मों का क्या हिसाब-किताब है? हम जीते हैं तो देखें मेरे कर्म कितने अच्छे हैं! तो मरूँगी भी अच्छा, गैरंटी है। अगर मेरे कर्म ऐसे नहीं है, सबकी दुआयें नहीं है, मैं दु:ख लेती या देती हूँ तो सोचो और प्रैक्टिकली देखो मेरा मरना और जीना कैसा होगा? मेरा मरना कैसा होगा वो अभी के जीने से देख लो अपने को। मैं ऐसे कर्म न करूँ, मेरा ऐसा कर्म न हो जो मेरे जीने में किसी को फायदा न हो। अभी परमात्मा बाप सर्वशक्तिवान मिला है तो जितने श्रेष्ठ कर्म करने चाहें उतना कर सकते हैं क्योंकि परमात्मा के बाद, कर्म बड़े बलवान हैं परन्तु हमारा कोई भी ऐसा साधारण कर्म न हो। साधारणता भी नुकसानकारक है। साधारण बातें करना, सोचना...क्या माला में आयेगा वो? इम्पॉसिबल है इसलिए साधारणता भी न हो। श्रेष्ठता हो। कभी भी कोई एक बात दस बारी रिपीट की होगी, पत्र में लिखेंगे वही बात...अरे, क्या करते हो? टाइम वेस्ट नहीं करो। वही बात, पुरानी बात, जो बात बीती अपने से हुई या दूसरे से हुई, बीती को चितवो नहीं, ऐसा अपने आपको पक्का करना चाहिए। तो ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चारो ही सब्जेक्ट्स में अच्छी मार्क्स लेनी हैं।

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

भाग्य और भगवान को कभी नहीं भूलना

ओम् शान्ति शब्द कितना मीठा है। आप सबका भाग्य देख करके हम बहुत खुश हो रहे थे कि देखो, किन आत्माओं का भाग्य है। इतना बड़ा भाग्य जो आपको ही बाबा ने चुना। नशा रहता है ना! आपके साथ कितने रहते होंगे लेकिन उनमें से आपको क्यों ढूँढ़ा! और आपने भी बाबा को ढूँढ़ लिया। तो भाग्य और भगवान, कभी अपने इस भाग्य को भूलना नहीं। चाहे पुराने हो गये हैं, अपनी लाइफ एकदम उसी रीति से चल रही है, जैसे चलती है लेकिन बाबा को दिल में समाया हुआ है। अभी दिल में जब बाबा को समा लिया तो कहाँ जायेगा! जा ही नहीं सकता है। बाबा का प्यार एक एक बच्चे से है। ऐसे नहीं बाबा के लिए तो बहुत हैं ना! नहीं। हम ही हैं बाबा के लिये, इतना नशा है ना। चलो साधारण हैं लेकिन बाबा के लिये एक एक बाबा का बच्चा महान है।

और हमें भी आप सब भाई बहनों का भाग्य देख दिल में यही आ रहा है वाह! आप सबका भाग्य वाह! हमें ही बाबा ने ढूँढ़ा, कितना नशा है! चाहे हम क्या भी कर रहे हैं लेकिन हैं किसके? चलो झाड़ू लगाते हैं, झाड़ू लगाने वाला भी किसका है? भगवान का बच्चा है। साधारण काम करते भी नशा तो रहता है ना! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा भाग्य! तो हमेशा और कुछ भी नहीं याद आवे ना, यह नहीं भूलना वाह बाबा! वाह मेरा भाग्य! अपना भाग्य देखो, बाबा ने कहाँ से आके चुना। देखो, कोई कहाँ रहता था, कोई कहाँ रहता था....लेकिन बाबा ने अपने बच्चों को ढूँढ़ लिया। तो भगवान ने हमको ढूँढ़ा, हमारे पड़ोसियों को नहीं ढूँढ़ा, बाबा को हम ही पसंद आये। तो ज़रूर कोई भाग्य है ना। बहुत बड़ा भाग्य है। और सिखाया क्या! बाबा कहते हैं योग सीख लो, बस। अगर योगी आत्मा हैं तो सब प्राप्तियाँ हैं क्योंकि पहले है अतीन्द्रिय सुख, बाबा से मिलके क्या मिला? अतीन्द्रिय सुख। और एक जन्म के लिए नहीं, आगे भी मिलेगा, गैरंटी है। तो वाह मेरा भाग्य! यह गीत तो सबके अन्दर चलता ही है ना। परमात्मा ही मेरा हो गया और क्या चाहिए? हम बाबा को कैसे याद करते हैं, मेरा बाबा हरेक यही कहता है। यह नहीं कहता है तेरा बाबा, नहीं मेरा बाबा। तो मेरे के ऊपर कितना नाज़ होता है। और खुशी कितनी होती है, लोग अभी तक ढूँढ़ रहे हैं और हम क्या कहेंगे पा लिया, मिल गया है। है ना इतनी खुशी! कभी नहीं भूलना वाह मेरा भाग्य! वाह भगवान वाह! अभी बाबा मिला, यह तो लक हुआ, यह तो निश्चित हो गया ना, हिल सकता है क्या! नहीं। संकल्प में भी नहीं। चलो कोई भी बात हुई, बात बात से होगी ना, भगवान बाबा क्यों भूले। संगठन है, संगठन में तो बातें होंगी। दो बर्तन भी मिलते हैं तो भी एक दो में लगते हैं। तो इतना बड़ा संगठन है बातें तो होंगी थोड़ी बहुत लेकिन हमारे लिये बातें नहीं। हमारे लिये भाग्य है। अपने भाग्य को सदा याद रखो। वाह मेरा भाग्य! कितने आराम से रह रहे हैं। हमें तो स्थापना का याद आ रहा था, बाबा ने मुख्य क्या सिखाया? योगी बनो। योग के प्रति बाबा खुद भी ड्रिल कराता, भले साकार में नहीं है लेकिन आप योग लगाते हो किससे? बाबा से ना। और बाबा भी रेसपॉन्ड कितना अच्छा देता है। जो चाहे लो, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम जो चाहिए लो, सब दे रहा है क्योंकि बच्चे हैं ना, बच्चे तो मिलकियत के मालिक होते हैं ना। तो खुशी रहती है कि कामकाज करते, काम कर रहे हैं, भण्डारे में रोटी बना रहे हैं, सफाई कर रहे हैं। अरे, यह तो कुछ भी नहीं है, अगर खाली रहेंगे तो बीमार हो जायेंगे इसलिए शरीर को भी कुछ चाहिए। लेकिन हमारा भाग्य जो बाबा को मैं ही पसंद आ गया। मेरे मोहल्ले में कितने होंगे, कुमार कितने होंगे लेकिन बाबा की नज़र मेरे ऊपर ही पड़ी। लक है ना!